Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भूमिका

डॉ. ममता पंवार*

* सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस, शास. माधव महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और बहुआयामी है। सदियों से, ग्रामीण महिलाएं न केवल घर-परिवार संभालती आ रही हैं, बल्कि कृषि, पशुपालन, हस्तशिल्प और अन्य गैर-कृषि कार्यों में भी सक्रिय रूप से योगदान दे रही हैं। यह शोध पत्र ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की महत्वपूर्ण भागीदारी का विश्लेषण करता है। इसमें उनके आर्थिक योगदान, सामाजिक स्थिति, और सशक्तिकरण के मार्ग में आने वाली चुनौतियों का गहन अध्ययन किया गया है। यह पत्र दर्शाता है कि महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण केवल लैंगिक समानता का मुद्दा नहीं है, बल्कि यह गरीबी उन्मूलन, खाद्य सुरक्षा और सतत ग्रामीण विकास के लिए भी एक आवश्यक शर्त है।

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ की एक बड़ी आबादी आज भी गाँवों में निवास करती है। इस ग्रामीण परिदृश्य में, महिलाएं अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं। हालांकि, उनका योगदान अक्सर अदृश्य या कम करके आंका जाता है। पारंपरिक रूप से, उन्हें केवल गृहणी के रूप में देखा जाता है, जबकि वे खेतों में, मवेशियों की देखभाल में, और घरेलू उद्योगों में महत्वपूर्ण श्रम का योगदान करती हैं। भारत में, कृषि क्षेत्र में लगभग 80% ग्रामीण महिलाएं कार्यरत हैं। यह शोध पत्र इसी छिपे हुए योगदान को उजागर करने और उनके सशक्तिकरण की आवश्यकता पर प्रकाश डालने का प्रयास करता है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं का योगदान– ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं का योगदान कई क्षेत्रों में फैला हुआ है। उनका श्रम न केवल परिवार की आय बढ़ाता है बल्कि समग्र आर्थिक विकास में भी सहायक होता है।

कृषि और संबद्ध क्षेत्र – कृषि ग्रामीण अर्थव्यवस्था का सबसे बड़ा हिस्सा है और इसमें महिलाओं की भागीदारी बहुत अधिक है। वे बुवाई से लेकर कटाई, निराई, रोपण और फसल के बाद के कार्यों तक हर चरण में सक्रिय रहती हैं।

फसल उत्पादन– महिलाएं धान, गेहूं, बाजरा और अन्य फसलों के उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। अक्सर, कृषि के कुछ कठिन कार्य, जैसे कि रोपण और निराई, मुख्य रूप से महिलाओं द्वारा ही किए जाते हैं।

पशुपालन– गाय, भैंस, बकरी और मुर्गीपालन में भी महिलाओं की भूमिका प्रमुख होती है। वे दूध निकालना, चारे की व्यवस्था करना और पशुओं की देखभाल जैसे कार्य करती हैं। पशुपालन से होने वाली आय अक्सर घरेलू खर्चों और बच्चों की शिक्षा में लगाई जाती है।

मत्स्य पालन और वन उत्पाद– तटीय और वन-क्षेत्रों में, महिलाएं मछली पकड़ने, वन उत्पाद जैसे लकड़ी, औषधीय पौधों और तेंदू के पत्ते इकट्ठा करने में भी संलग्न होती हैं, जो उनके परिवार की आजीविका का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

गैर-कृषि गतिविधियां– कृषि के अलावा, महिलाएं कई गैर-कृषि गतिविधियों में भी शामिल हैं, जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था को विविधता प्रदान करती हैं।

हस्तशिल्प और कुटीर उद्योग– ग्रामीण महिलाएं मिट्टी के बर्तन, कपड़े, टोकरियाँ, खिलौने और अन्य हस्तशिल्प वस्तुएं बनाती हैं। ये उत्पाद स्थानीय बाजारों और कभी-कभी शहरी क्षेत्रों में भी बेचे जाते हैं, जिससे उन्हें अतिरिक्त आय होती है।

छोटे व्यवसाय और उद्यमिता– स्वयं सहायता समूहों (SHGs) के उदय के साथ, ग्रामीण महिलाएं छोटे व्यवसाय शुरू कर रही हैं। वे मसाले पीसने, पापड़ बनाने, सिलाई-कढ़ाई और खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों को सफलतापूर्वक चला रही हैं। इन पहलों ने न केवल उनकी आय में वृद्धि की है, बल्कि उन्हें सामाजिक और आर्थिक रूप से सशक्त भी बनाया है।

ग्रामीण महिलाओं के समक्ष चुनौतियां– महिलाओं के महत्वपूर्ण योगदान के बावजूद, उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जो उनके पूर्ण सशक्तिकरण में बाधा डालती हैं।

लैंगिक असमानता और सामाजिक मानदंड– पारंपरिक सामाजिक सोच अक्सर महिलाओं की भूमिका को घर तक सीमित रखती है। उन्हें अक्सर निर्णय लेने की प्रक्रिया से बाहर रखा जाता है और उनकी राय को महत्व नहीं दिया जाता।

शिक्षा और कौशल की कमी– ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियों के लिए शिक्षा तक पहुंच सीमित है, जिससे वे कौशल विकास और तकनीकी प्रशिक्षण से वंचित रह जाती हैं। यह उन्हें कम-मजदूरी वाले, अकुशल कार्यों तक ही सीमित रखता है।

वित्तीय संसाधनों तक सीमित पहुंच– महिलाओं को अक्सर ऋण, बैंक खातों और अन्य वित्तीय सेवाओं तक पहुँचने में कठिनाई होती है, क्योंकि उनके पास संपत्ति या जमीन का स्वामित्व नहीं होता।

भूमि और संपत्ति का स्वामित्व– अधिकांश ग्रामीण महिलाओं के नाम पर कोई जमीन या संपत्ति नहीं होती। यह उन्हें आर्थिक रूप से कमजोर बनाता है और उन्हें कृषि या व्यवसाय के लिए ऋण लेने से रोकता है।

सशक्तिकरण के लिए सरकारी पहल और रणनीतियाँ – इन चुनौतियों

को दूर करने के लिए, भारत सरकार और विभिन्न संगठनों ने कई पहलें शुरू की हैं।

स्वयं सहायता समूह (SHGs)– SHGs ने ग्रामीण महिलाओं को एकजुट कर बचत करने, ऋण लेने और सामूहिक रूप से आर्थिक गतिविधियां शुरू करने में मदद की है। ये समूह महिलाओं को नेतृत्व कौशल और आत्मविश्वास विकसित करने के लिए एक मंच प्रदान करते हैं।

कौशल विकास कार्यक्रम– विभिन्न सरकारी योजनाएं, जैसे दीनदयाल अंत्योदय योजना–राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (DAY NRLM), महिलाओं को उनके कौशल को बढ़ाने और उन्हें स्वरोजगार के लिए तैयार करने में मदद करती हैं।

संपत्ति का स्वामित्व– कुछ राज्यों ने महिलाओं के नाम पर संपत्ति खरीदने पर स्टांप शुल्क में छूट जैसे प्रोत्साहन दिए हैं। इससे उन्हें भूमि और संपत्ति का स्वामित्व प्राप्त करने में मदद मिलती है।

वित्तीय समावेशन– प्रधानमंत्री जन धन योजना (PMJDY) और अन्य वित्तीय समावेशन पहलों ने महिलाओं के लिए बैंक खाते खोलना और उन्हें बैंकिंग सेवाओं से जोड़ना आसान बना दिया है।

निष्कर्ष– ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भूमिका निर्विवाद रूप से महत्वपूर्ण है। वे न केवल परिवार की आय में वृद्धि करती हैं, बल्कि सामाजिक और सामुदायिक विकास को भी बढ़ावा देती हैं। हालांकि, उनके योगदान को पूरी तरह से साकार करने के लिए, हमें उनके सामने आने वाली चुनौतियों को दूर करने की आवश्यकता है।

भविष्य में, नीति निर्माताओं को महिलाओं के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं, और वित्तीय संसाधनों तक पहुँच सुनिश्चित करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। भूमि और संपत्ति के स्वामित्व को बढ़ावा देना, कौशल विकास कार्यक्रमों को मजबूत करना और महिला–केंद्रित नीतियों को लागू करना महत्वपूर्ण है। जब ग्रामीण महिलाएं सशक्त होंगी, तो वे न केवल अपने परिवारों को गरीबी से बाहर निकालेंगी, बल्कि एक मजबूत और समृद्ध राष्ट्र के निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान देंगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची:–

1. गुप्ता, एन. (2023). ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं की आर्थिक स्थिति का अध्ययन. Journal of Research in Innovative Agricultural Review, 14.
2. संयुक्त राष्ट्र महिला (UN Women). (2013). The role of women in rural development, food production and poverty eradication.
3. अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO). (2017). Empowering Women in the Rural Economy.
4. चौधरी, ए., और शर्मा, एम. (2023). ग्रामीण महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण एक समाजशास्त्रीय अध्ययन. शोध मंथन, खंड XIV,, अंक III.भारत सरकार. (2019).
5. दीनदयाल अंत्योदय योजना–राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (NRLM). ग्रामीण विकास मंत्रालय।
6. सिंह, आर. (2023). Women as Catalysts of Rural Economic Development. CDPP.
7. पटेल, एस., और देवी, पी. (2022). भारतीय ग्रामीण समाज में महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति।

****